मेरे राम की कथा

सीता गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

simon_ram

मेरे राम की कथा

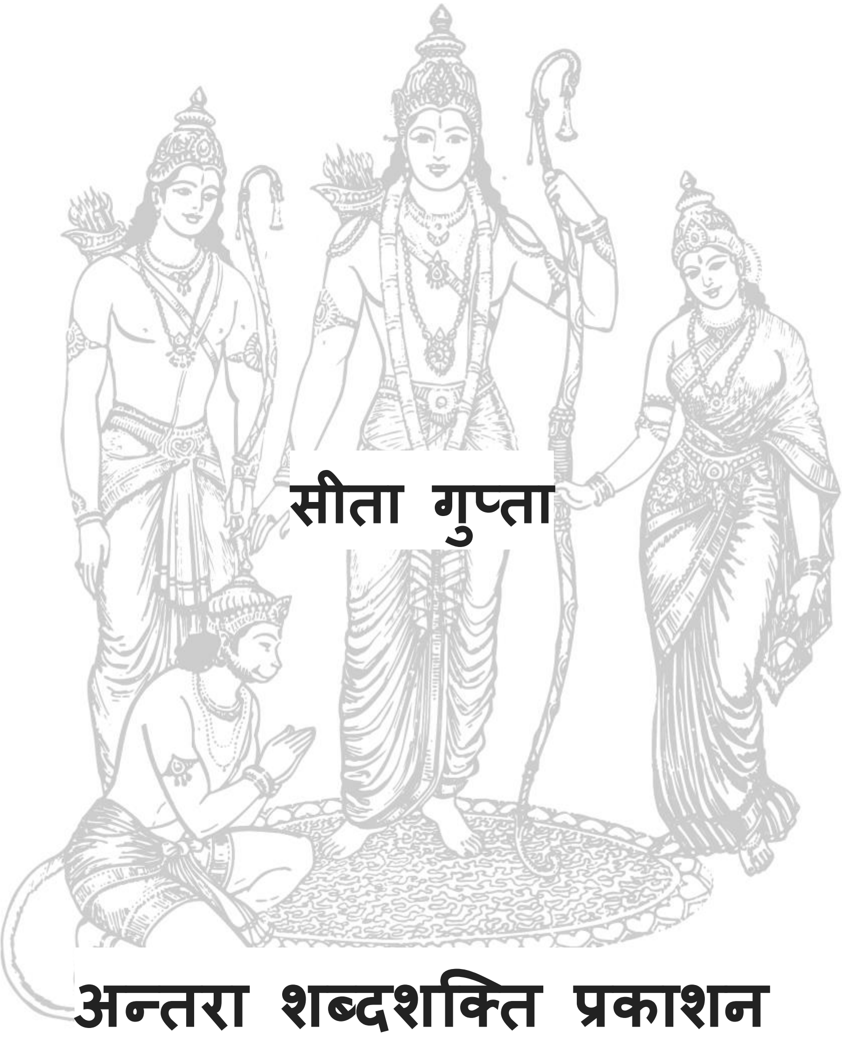

सीता गुप्ता

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-41-7

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9424765259, 9009465259

ईमेल -antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट -www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण -2021

मुल्य- 90.00 रूपये

मुद्रक - शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SITA GUPTA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

यह पूर्णतया सत्य है कि संस्कारों से पोषित अध्यात्म से जुड़ा व्यक्ति नित्य ही अपने ईश को शीश झुकाता है। यदि वह कभी जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियों के चक्रवात में घिरने लगता है तो उस समय भी वह सत्कर्म करते हुए अपने प्रभु चरणों को दृढ़ता और विश्वास के साथ पकड़ता है, कि प्रभु ही सब ठीक कर देंगे।

उसकी यही श्रद्धा यही भक्ति भावना उसे प्रभु कृपा दिलवाती है क्योंकि प्रभु तो वैसे भी सदैव अपने भक्तों का ध्यान रखते हैं। आत्मा में ही परमात्मा का वास होता है इसीलिए भक्तों की सच्ची पुकार से भगवन हमेशा द्रवित होते हैं और उसके सारे काम संभालते हैं।

इस कलयुग में भवसागर से पार जाने के लिए तो श्री राम को ही मूल आधार माना गया है, इसीलिए तो बड़े-बड़े संत ऋषि-मुनियों ने राम नाम की महिमा को गाया है।

उन्हीं प्रभु राम के आशीष से एक दिन अचानक ही उनकी विशेष कृपा होने पर मुझसे भी मेरे राम की कथा लिख गई। जिसे मैं प्रभु राम के चरणों में समर्पित करते हुए, आपके सम्मुख रख रही हूँ साथ ही पूर्ण आशान्वित हूँ कि मेरी यह पुस्तक आपको अवश्य पसंद आएगी और आप मुझे एवं मेरी लेखनी को आगे बढ़ने का स्नेहाशीष देंगे।

इसी आकांक्षा के साथ......

सीता गुप्ता, दुर्ग छत्तीसगढ़

मेरे राम की कथा

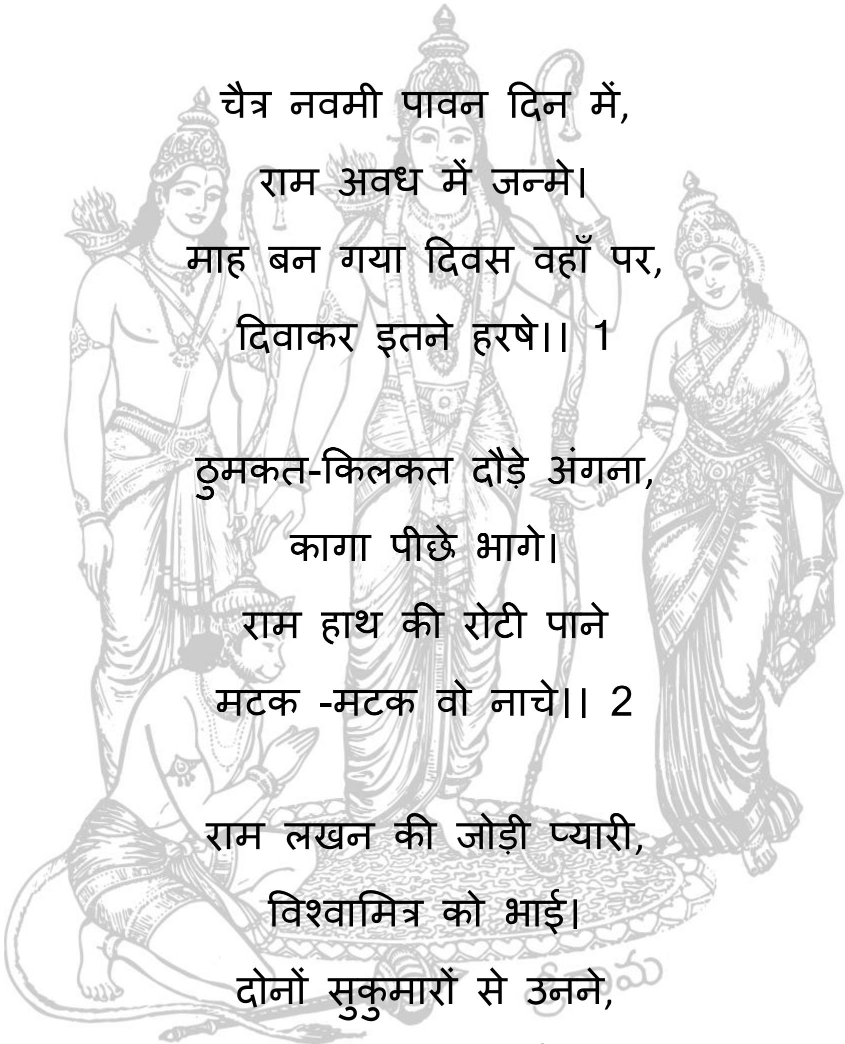

चैत्र नवमी पावन दिन में,
राम अवध में जन्मे।
माह बन गया दिवस वहाँ पर,
दिवाकर इतने हरषे।। 1

ठुमकत-किलकत दौड़े अंगना,
कागा पीछे भागे।
राम हाथ की रोटी पाने
मटक -मटक वो नाचे।। 2

राम लखन की जोड़ी प्यारी,
विश्वामित्र को भाई।
दोनों सुकुमारों से उनने,
यज्ञ की रक्षा करवाई।। 3

कर्तव्य बोध पूरा कर राम ने,
आशीष मुनि का पाया।
बला -अति बला गुप्त विद्या संग,
अस्त्र शस्त्रों को पाया।। 4

नारी बनी शिला देखकर,
दुखी हुए रघुराई ।
गौतम नार अहल्या तारी,
मुदित हुए रघुराई।। 5

सीय स्वयंबर पिनाक तोड़कर,
शक्ति को दिखलाया।
क्रोधित परशुराम को शांत कर,
दिव्य रूप दिखलाया।। 6

जनकपुरी की गौरव गाथा,
अयोध्या संग मुस्काई।
जनकपुरी की चार कुमारी,
दशरथ बहू बन आईं।। 7

राज्याभिषेक की हुई तैयारी,
विधि को रास ना आया।
हुई कलंकित कैकई माता,
मंथरा ने जाल बिछाया।। 8

राम लखन सिय चले हैं वन को,
दशरथ हुए अभागे।
राम-राम हे राम को कहते,
वो तो प्राण थे त्यागे।। 9

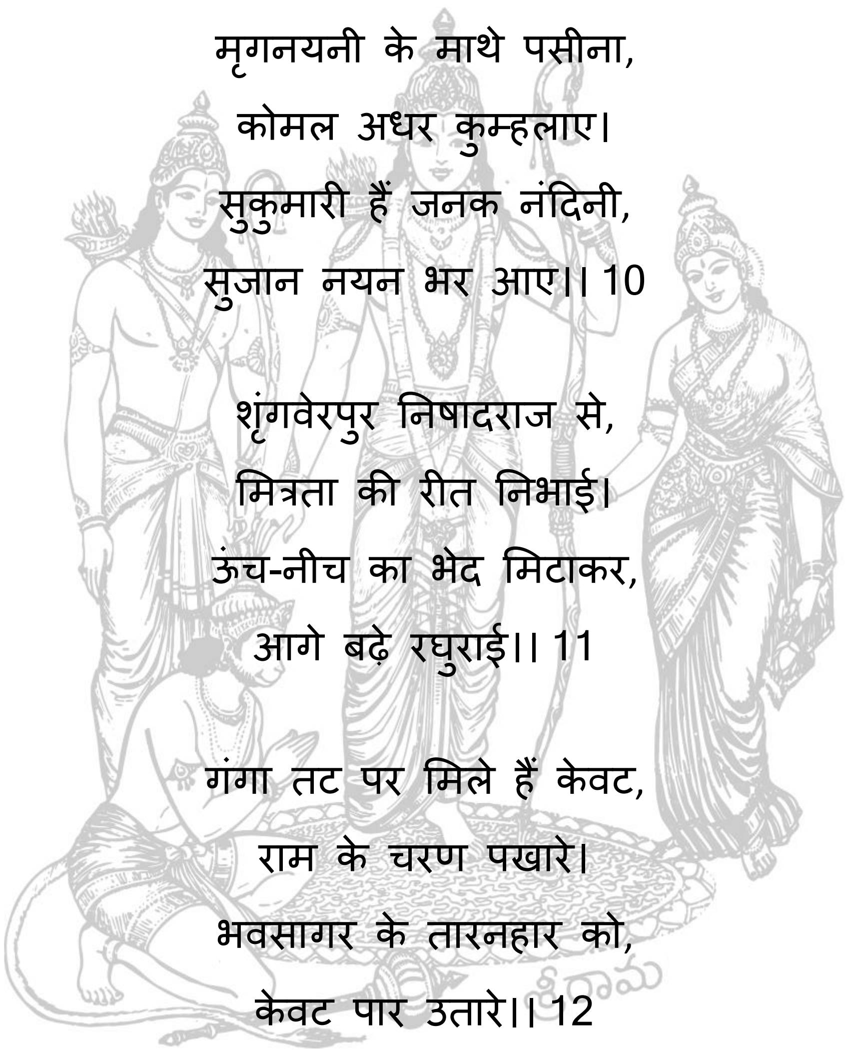

मृगनयनी के माथे पसीना,
कोमल अधर कुम्हलाए।
सुकुमारी हैं जनक नंदिनी,
सुजान नयन भर आए।। 10

शृंगवेरपुर निषादराज से,
मित्रता की रीत निभाई।
ऊंच-नीच का भेद मिटाकर,
आगे बढ़े रघुराई।। 11

गंगा तट पर मिले हैं केवट,
राम के चरण पखारे।
भवसागर के तारनहार को,
केवट पार उतारे।। 12

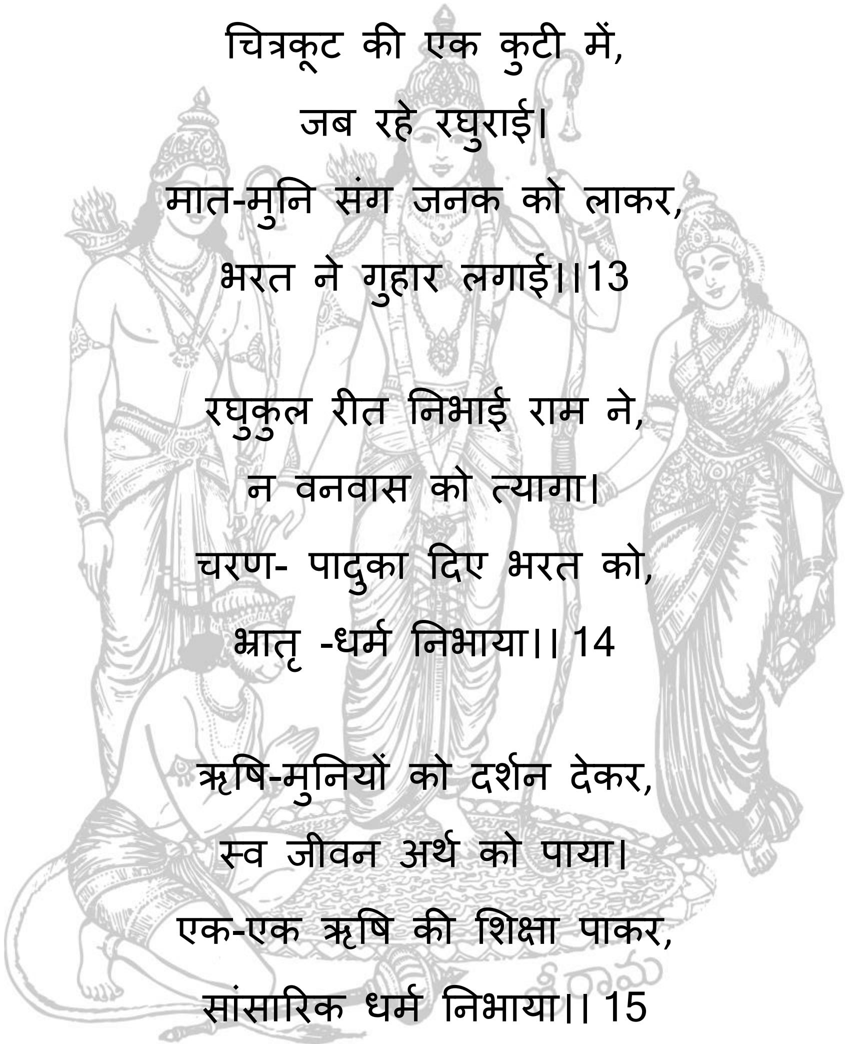

चित्रकूट की एक कुटी में,
जब रहे रघुराई।
मात-मुनि संग जनक को लाकर,
भरत ने गुहार लगाई।।13

रघुकुल रीत निभाई राम ने,
न वनवास को त्यागा।
चरण- पादुका दिए भरत को,
भ्रातृ -धर्म निभाया।। 14

ऋषि-मुनियों को दर्शन देकर,
स्व जीवन अर्थ को पाया।
एक-एक ऋषि की शिक्षा पाकर,
सांसारिक धर्म निभाया।। 15

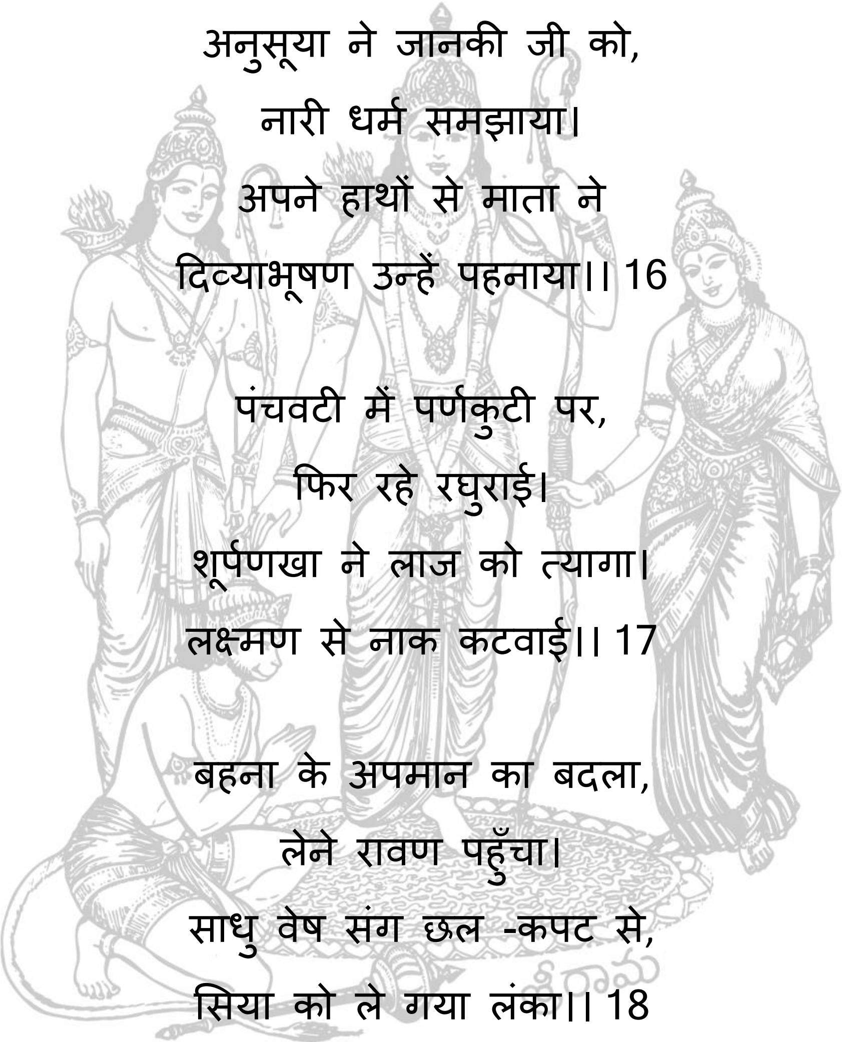

अनुसूया ने जानकी जी को,
नारी धर्म समझाया।
अपने हाथों से माता ने
दिव्याभूषण उन्हें पहनाया।। 16

पंचवटी में पर्णकुटी पर,
फिर रहे रघुराई।
शूर्पणखा ने लाज को त्यागा।
लक्ष्मण से नाक कटवाई।। 17

बहना के अपमान का बदला,
लेने रावण पहुँचा।
साधु वेष संग छल -कपट से,
सिया को ले गया लंका।। 18

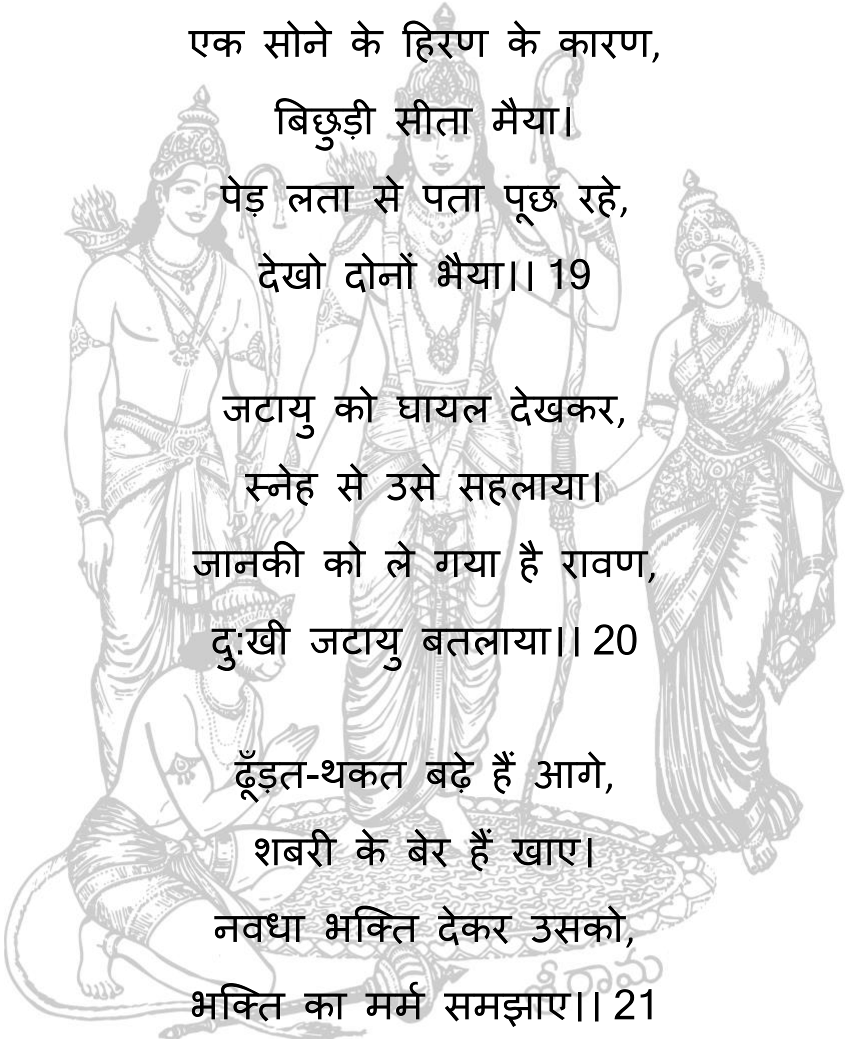

एक सोने के हिरण के कारण,
बिछुड़ी सीता मैया।
पेड़ लता से पता पूछ रहे,
देखो दोनों भैया।। 19

जटायु को घायल देखकर,
स्नेह से उसे सहलाया।
जानकी को ले गया है रावण,
दु:खी जटायु बतलाया।। 20

ढूँड़त-थकत बढ़े हैं आगे,
शबरी के बेर हैं खाए।
नवधा भक्ति देकर उसको,
भक्ति का मर्म समझाए।। 21

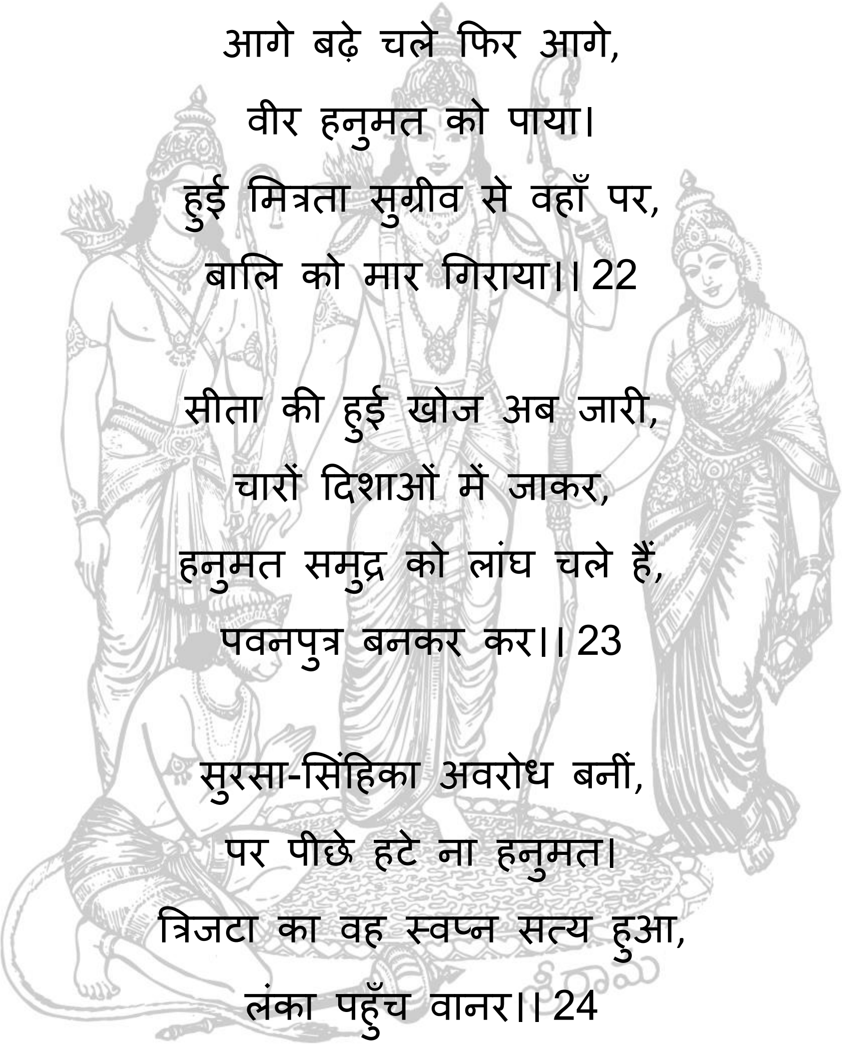

आगे बढ़े चले फिर आगे,
वीर हनुमत को पाया।
हुई मित्रता सुग्रीव से वहाँ पर,
बालि को मार गिराया।। 22

सीता की हुई खोज अब जारी,
चारों दिशाओं में जाकर,
हनुमत समुद्र को लांघ चले हैं,
पवनपुत्र बनकर कर।। 23

सुरसा-सिंहिका अवरोध बनीं,
पर पीछे हटे ना हनुमत।
त्रिजटा का वह स्वप्न सत्य हुआ,
लंका पहुँच वानर।। 24

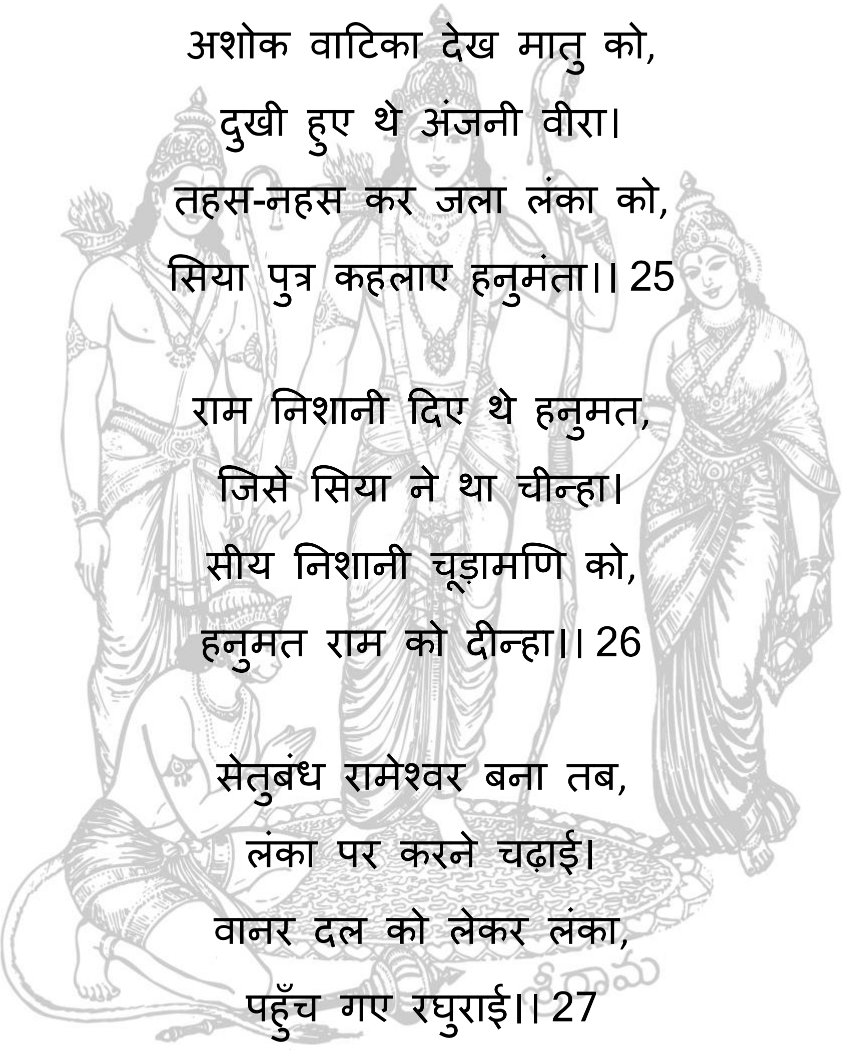

अशोक वाटिका देख मातु को,
दुखी हुए थे अंजनी वीरा।
तहस-नहस कर जला लंका को,
सिया पुत्र कहलाए हनुमंता।। 25

राम निशानी दिए थे हनुमत,
जिसे सिया ने था चीन्हा।
सीय निशानी चूड़ामणि को,
हनुमत राम को दीन्हा।। 26

सेतुबंध रामेश्वर बना तब,
लंका पर करने चढ़ाई।
वानर दल को लेकर लंका,
पहुँच गए रघुराई।। 27

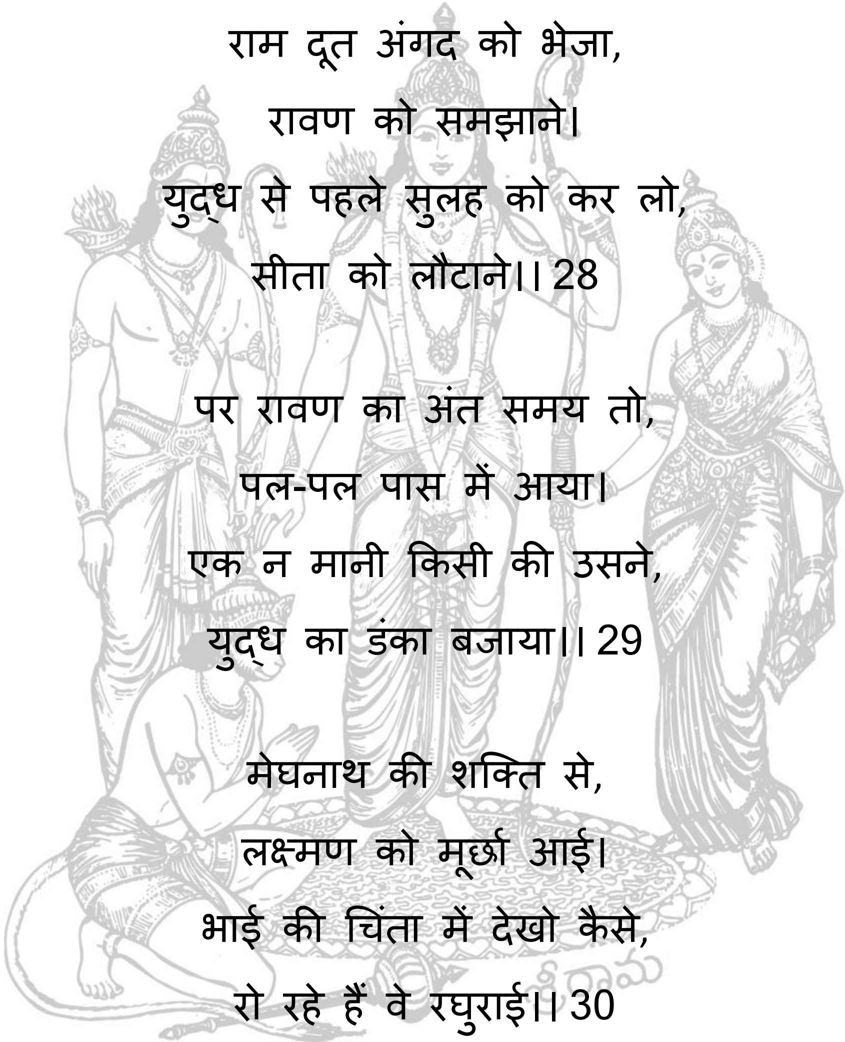

राम दूत अंगद को भेजा,
रावण को समझाने।
युद्ध से पहले सुलह को कर लो,
सीता को लौटाने।। 28

पर रावण का अंत समय तो,
पल-पल पास में आया।
एक न मानी किसी की उसने,
युद्ध का डंका बजाया।। 29

मेघनाथ की शक्ति से,
लक्ष्मण को मूर्छा आई।
भाई की चिंता में देखो कैसे,
रो रहे हैं वे रघुराई।। 30

सुषेण वैद्य ने संजीवनी लाने,
विधि थी एक बताई।
हनुमत लाए समय पर बूटी,
लक्ष्मण की जान बचाई।। 31

फिर हुआ भीषण संग्राम वो,
अस्त्र ने अस्त्र गिराए।
मेघनाथ -कुंभकरण संग,
अहिरावण प्राण गंवाए।। 32

माँ भवानी की शक्ति द्वारा,
रामा ने शस्त्र चलाए।
विजयादशमी को रावण भी मरा,
देवताओं ने पुष्प बरसाए।। 33

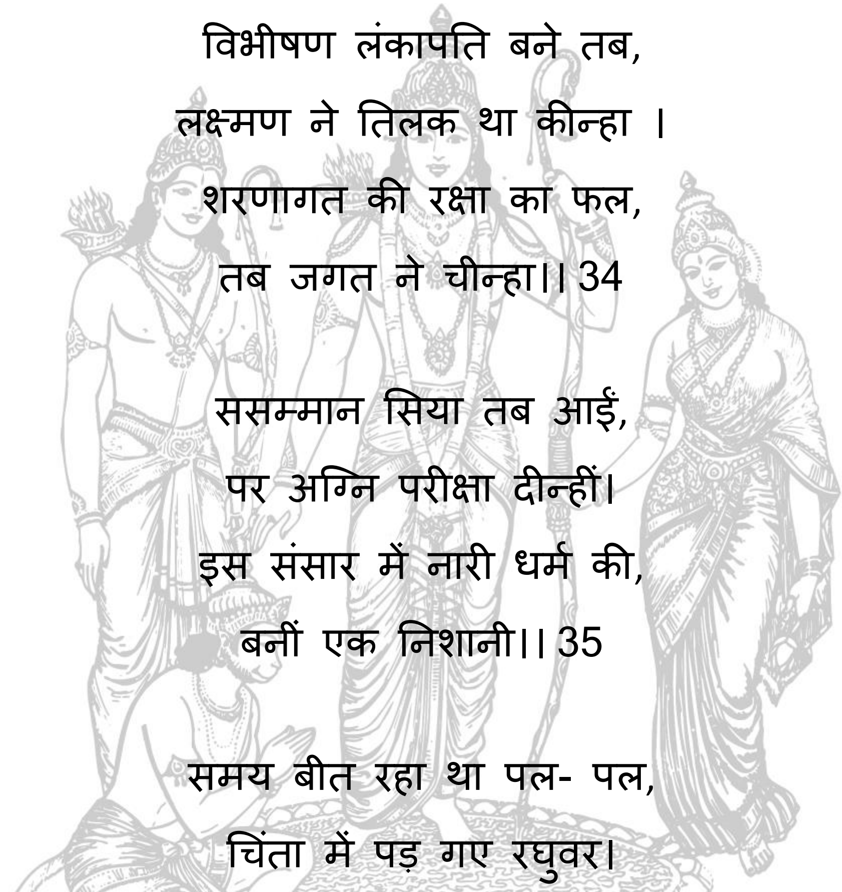

विभीषण लंकापति बने तब,
लक्ष्मण ने तिलक था कीन्हा ।
शरणागत की रक्षा का फल,
तब जगत ने चीन्हा।। 34

ससम्मान सिया तब आईं,
पर अग्नि परीक्षा दीन्हीं।
इस संसार में नारी धर्म की,
बनीं एक निशानी।। 35

समय बीत रहा था पल- पल,
चिंता में पड़ गए रघुवर।
भरत की प्रतिज्ञा याद करके,
व्याकुल हो गए रघुवर।। 36

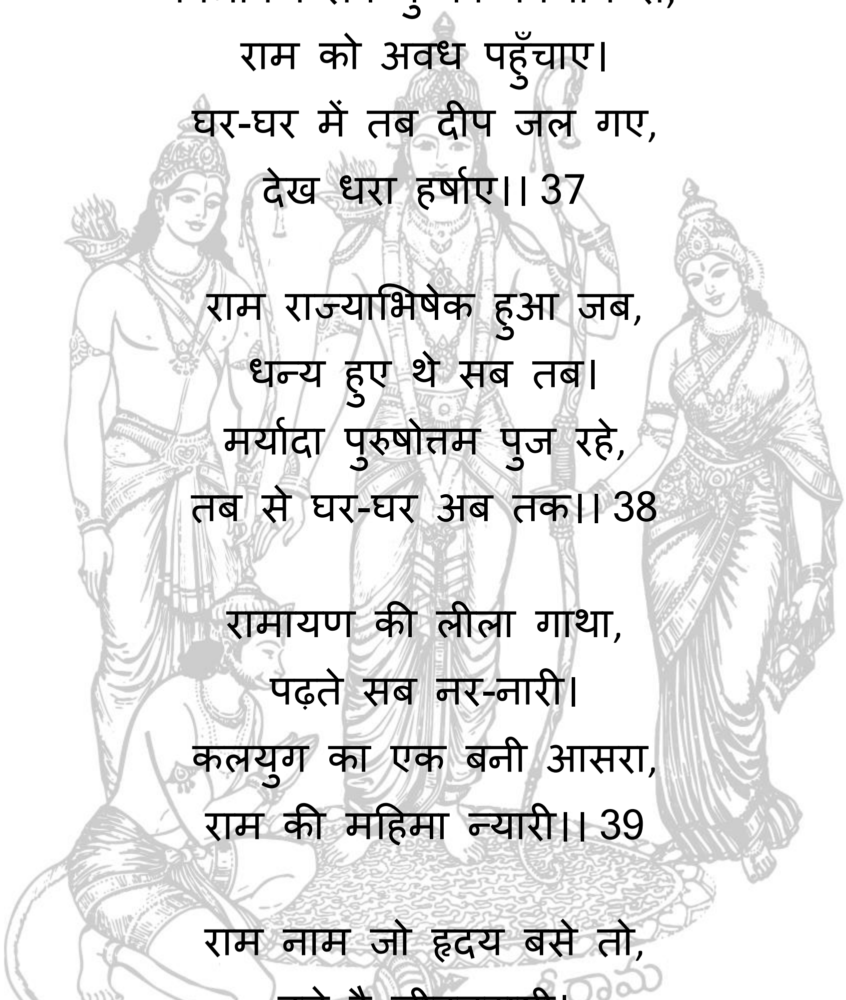

विभीषण तब पुष्पक विमान से,
राम को अवध पहुँचाए।
घर-घर में तब दीप जल गए,
देख धरा हर्षाए।। 37

राम राज्याभिषेक हुआ जब,
धन्य हुए थे सब तब।
मर्यादा पुरुषोत्तम पुज रहे,
तब से घर-घर अब तक।। 38

रामायण की लीला गाथा,
पढ़ते सब नर-नारी।
कलयुग का एक बनी आसरा,
राम की महिमा न्यारी।। 39

राम नाम जो हृदय बसे तो,
बने है जीवनदायी।
राम नाम सब सुमिरन कर लो,
यह तो मुक्तिदायी।। 40

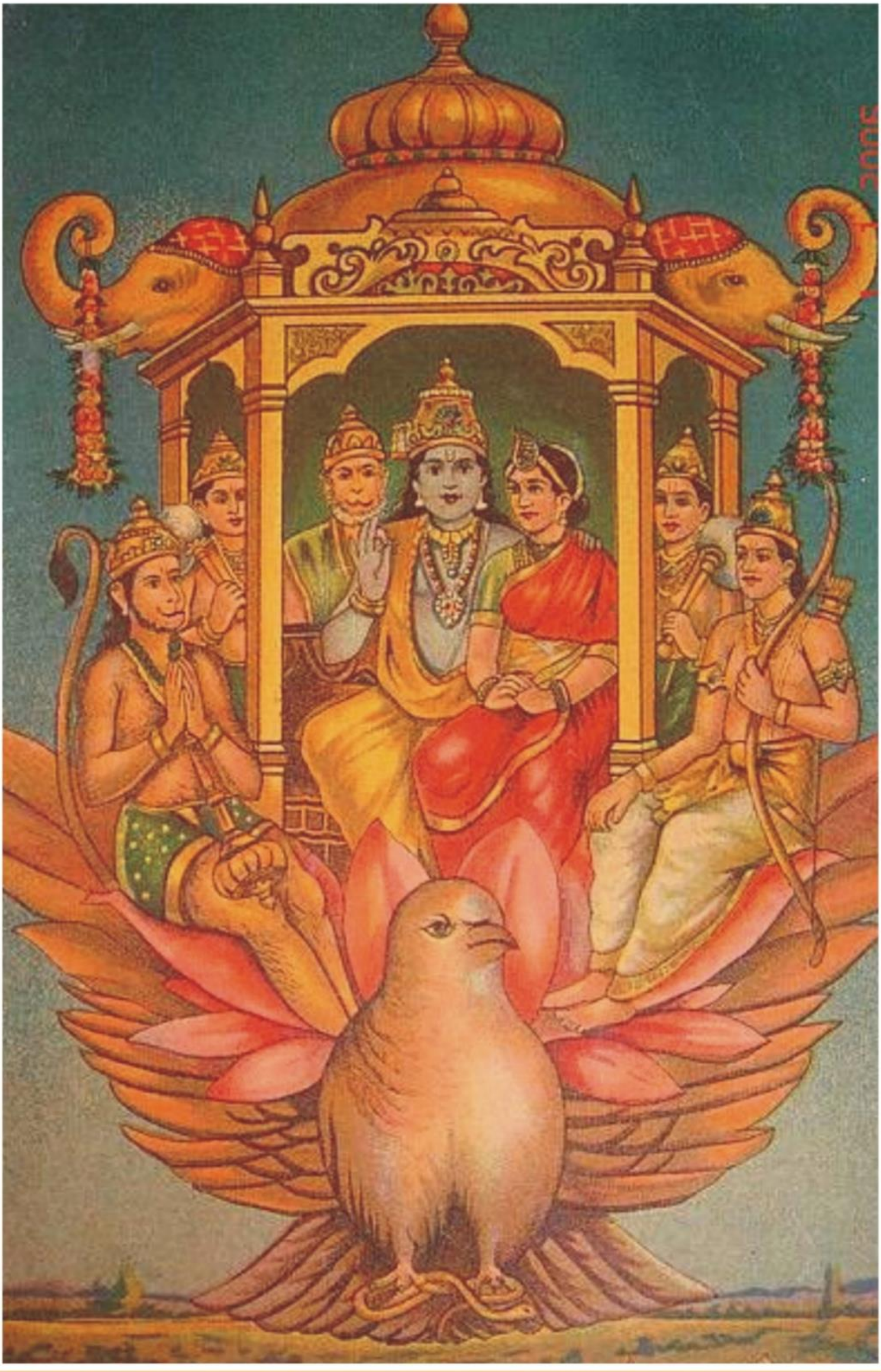

नाम - **सीता गुप्ता**

पति - श्री आर.के. गुप्ता

माता - श्रीमती त्रिवेणी सरावगी

पिता - स्व. श्री ललता प्रसाद सरावगी

शिक्षा - एम.ए.(हिंदी)एम.ए. (समाजशास्त्र) बी.एड.

पता - सीता गुप्ता, सी/ओ आर.के. गुप्ता, जिप्सी १,
गणपति विहार, पोटिया कला रोड,"दुर्ग" (छ.ग.)

मो.नंबर - ०८८३९६४४५०५१

ई मेल - sitarkgupta@gmail.com

विधा - गद्य-पद्य लेखन

कार्यक्षेत्र - सेवानिवृत्त वरिष्ठ शिक्षिका (एन.एम.डी.सी. बैलाडीला छत्तीसगढ़)

प्रकाशन - ६ एकल काव्य संग्रह व ३५ साझा संकलन

सम्मान - अनेक "विशेष सम्मान"(कर्मभूमि बैलाडीला से वर्तमान तक) एवं विभिन्न संस्थाओं में गद्य -पद्य लेखन आडियो-वीडियो कवि सम्मेलन आदि की प्रस्तुति में २५० से अधिक डिजिटल सम्मान पत्र की प्राप्ति

उपलब्धि - पर्यावरण स्लोगन प्रथम पुरस्कृत बोर्ड नाम के साथ बैलाडीला की मुख्य सड़क पर आज भी स्थापित है। अंतरा की फेसबुक लाइव में प्रथम स्थान की प्राप्ति २०२०, वैश्विक महामारी पर संदेशात्मक गीत की यूट्यूब की प्रस्तुति में जनमानस द्वारा प्रशंसा २०२१

उद्देश्य- शब्द शब्द मोती बन जाए, ऐसा ही मैं सृजन करूँ।
जिसे देकर जनमानस को, सच्चा पथ मैं दे सकूँ।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो. - 9424765259, ईमेल - antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-90995-41-7

मुल्य - 90/-